राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
स्व. आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कारः
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

तावत् पादाहतो वह्निर्, – यावद् भस्मावृतो हि सः ।
परन्त्वनावृतो वह्निः, कस्य नाशाय न प्रभुः ? ॥१८९॥

आग पैर से तब तक ही ठुकरायी जाती है, जब तक वह भस्म से ढकी रहती है । पर वही आग भस्म से ढकी न होने पर किसके नाश के लिये समर्थ नहीं है ?

The fire is kicked upon till is covered in ash. But, whom that fire cannot destroy when it is not covered in ash?

तावत् फलति शिक्षा न, यावदाचर्यते न सा ।
शिक्षानुरूपमाचारी, विरल एव कश्चन ॥१९०॥

शिक्षा तब तक नहीं फलती है, जब तक उसका आचरण नहीं किया जाता है । शिक्षा के अनुरूप आचरणकर्त्ता तो कोई विरला ही होता है ।

The education does not bear fruits till is used. Rare is the one who behaves as educated.

तावदेव हि वक्तव्यं, यस्य स्यात् परिपालनम् ।
अन्यथा निन्द्यते व्यक्तिर्, विश्वासस्तत्र नश्यति ॥१९१॥

व्यक्ति को उतना ही बोलना चाहिये जिसका परिपालन हो सके, नहीं तो उसकी निन्दा होती है और उसमें विश्वास नष्ट हो जाता है ।

The person should talk as much as can be realised, otherwise he will be blamed, and trust in him destroyed.

ते जना विरलाः सन्ति, ये स्मर्यन्ते मृता अपि ।
अन्यथा मृत्युलोकेऽस्मिन, जन्म मृत्युर्न कस्य हि ? ॥१९२॥

वे लोग बहुत कम हैं जो मरे हुए भी याद किये जाते हैं, अन्यथा इस मृत्युलोक में जन्म और मृत्यु किसकी नहीं होती है ?

There are few people that are remembered after death. Who is not born and does not die in this mortal world?

त्यज्यते प्राप्तकालश्चेद्, येन केनापि हेतुना ।
तर्हि जीवन–पर्यन्तें, किं पश्चात् तप्यते नहि ॥१९३॥

यदि मिला हुआ अवसर जिस किसी भी कारण से छोड़ दिया जाता है, तो क्या उससे जीवन–भर नहीं पछताना पडता ?

If for any reason the opportunity is missed, would not it be regretted the whole life?

त्यागीनो हि महात्मानस्, – तेषामेव सुकर्मभिः ।
विश्वभाषाऽऽसने नूनं, विराजिष्यति संस्कृतम् ॥१९४॥

जो त्यागी महात्मा है, उन्हीं के सुकर्मों से संस्कृत विश्वभाषा के सिंहासन पर निश्चितरूप से विराजमान होगी ।

By the good deeds of a renunciate saint, Sanskrit will surely be seated on the throne as a world language.

त्रुटिमज्ञानतः कुर्वन्, सुधार्यः स्यात् कथञ्चन ।
परं ज्ञानात् त्रुटिं कुर्वन्, सुधार्यः स्यात् कदापि न ॥१९५॥

अज्ञान से त्रुटि करता हुआ व्यक्ति किसी भी प्रकार सुधारा जा सकता है, पर ज्ञान से त्रुटि करता हुआ कभी भी सुधारा नहीं जा सकता ।

The person who does mistakes out of ignorance can improve, but the one who does mistakes out of the knowledge can never be improved.